पूजा के विविध उपचार

संक्षेप और विस्तार के भेद से अनेकों प्रकार के उपचार हैं- चौंसठ, अठारह, सोलह, दस और पाँच।

चौंसठ उपचार

देवी की पूजा के चौंसठ उपचार यहाँ लिखे जाते हैं। इष्टमन्त्र से इनका समर्पण होता है। मानस-पूजा में इनकी भावना होती है। वाग्बीज, मायाबीज और लक्ष्मीबीज के साथ भी इनका समर्पण होता है। जैसे पाद्य के समय '**ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पाद्यं कल्पयामि नमः।**' प्रत्येक उपचार का नाम जोड़कर यही मन्त्र बोल सकते हैं। ***उपचारों के नाम ये हैं-***

१. पाद्यम्
२. अर्घ्यम्
३. आचमनम्
४. सुगन्धितैलाभ्यङ्गम्
५. मज्जन-शालाप्रवेशनम्
६. मज्जनमणिपीठोपवेशनम्
७. दिव्यस्नानीयम्
८. उद्वर्तनम्
९. उष्णोदकस्नानम्
१०. कनककलशस्थित-सर्वतीर्थाभिषेचनम्
११. धौतवस्त्र-परिमार्जनम्
१२. अरुणदुकूलपरिधानम्
१३. अरुणदुकूलोत्तरीयम्
१४. आलेपमण्डपप्रवेशनम्
१५. आलेपमणिपीठोपवेशनम्
१६. चन्दनागुरुकुङ्कुममृगमदकर्पूर कस्तूरीरोचनादिव्यगन्धसर्वाङ्गानुलेपनम्,
१७. केशभारस्य कालागुरुधूपमल्लिकामालती-जातीचम्पकाशोकशत-पत्रपूगकुहरी पुन्नाग-कल्हारयूथीसर्वर्तु-कुसुममालाभूषणम्
१८. भूषणमण्डपप्रवेशनम्
१९. भूषणमणिपीठोपवेशनम्
२०. नवरत्नमुकुटम्
२१. चन्द्रशकलम्
२२. सीमन्तसिन्दूरम्
२३. तिलकरत्नम्
२४. कालाञ्जनम्
२५. कर्णबालीयुगलम्
२६. नासाभरणम्
२७. अधरयावकम्
२८. प्रथमभूषणम्
२९. कनकचित्रपदकम्
३०. महापदकम्
३१. मुक्तावली
३२. एकावली
३३. देवच्छन्दकम्
३४. केयूरगुलचतुष्कम्
३५. वलयावली
३६. ऊर्मिकावली
३७. काञ्चीदामकटिसूत्रम्
३८. शोभाख्याभरणम्
३९. पादकटकयुगलम्
४०. रत्ननूपुरम्
४१. पादाङ्गुलीयकम्
४२. एककरे पाशः
४३. अन्यकरे अङ्कुशः
४४. इतरकरेषु पुण्ड्रेक्षुचापम्
४५. अपरकरे पुष्पबाणाः
४६. श्रीमन्माणिक्यपादुका

४७. स्वसमानवेशास्त्रावरण-देवताभिः सह सिंहासनारोहणम्	५२. आनन्दोल्लासविलासहासः	५८. गन्धः
४८. कामेश्वरपर्यङ्कोपवेशनम्	५३. मङ्गलारार्तिकम्	५९. पुष्पम्
४९. अमृतासनम्	५४. श्वेतच्छत्रम्	६०. धूपम्
५०. आचमनीयम्	५५. चामरयुगलम्	६१. दीपः
५१. कर्पूरवीटिका	५६. दर्पणम्	६२. नैवेद्यम्
	५७. तालवृन्तम्	६३. पानम्
		६४. पुनराचमनीयम्

इसके पश्चात् ताम्बूलम्, नमस्कारम्- इत्यादि। इन सबके साथ पूर्वोक्तबीज पहले जोड़कर पीछे 'कल्पयामि नमः' कहना चाहिये मानस-पूजा में तो ये उपचार ही पूरा ध्यान करा देते हैं। बाह्यपूजा में उपचारों का अभाव होने पर भी स्थिरभाव से इन मन्त्रों का पाठ कर लेने पर पूजा का ही फल मिलता है।

अठारह उपचार

अष्टादशोपचार ये हैं-

१. आसन	१०. गन्ध
२. स्वागत	११. पुष्प
३. पाद्य	१२. धूप
४. अर्घ्य	१३. दीप
५. आचमनीय	१४. नैवेद्य
६. स्नानीय	१५. दर्पण
७. वस्त्र	१६. माल्य
८. यज्ञोपवीत	१७. अनुलेपन और
९. भूषण	१८. नमस्कार।

पाँच उपचार

पञ्चोपचार ये हैं-

१. गन्ध,	४. दीप और
२. पुष्प	५. नैवेद्य।
३. धूप	

सोलह उपचार

षोडशोपचार ये हैं।

१. पाद्य	९. धूप,
२. अर्घ्य,	१०. दीप,
३. आचमनीय,	११. नैवेद्य,
४. स्नानीय,	१२. आचमनीय,
५. वस्त्र,	१३. ताम्बूल,
६. आभूषण,	१४. स्तवपाठ,
७. गन्ध,	१५. तर्पण और
८. पुष्प,	१६. नमस्कार।

दस उपचार

दशोपचार ये हैं-

१. पाद्य	६. गन्ध
२. अर्घ्य	७. पुष्प
३. आचमनीय	८. धूप
४. मधुपर्क	९. दीप और
५. आचमनीय	१०. नैवेद्य।

आवश्यक बातें

आसन-समर्पण में आसन के ऊपर पाँच पुष्प भी रख लेने चाहिये। छः पुष्पों से स्वागत करना चाहिये। पाद्य में चार पल जल और उसमें श्यामा घास, दूब, कमल और अपराजिता देनी चाहिये। अर्घ्य में चार पल जल और गन्ध, पुष्प, अक्षत, यव, दूब, तिल, कुशा का अग्रभाग तथा श्वेत सरसों देने चाहिये। आचमनीय में छः पल जल और उसमें जायफल, लवङ्ग और कङ्कोल का चूर्ण देना चाहिये। मधुपर्क में कांस्यपात्रस्थित घृत, मधु और दधि देना चाहिये। मधुपर्क के पश्चात् वाले आचमन में केवल एक पल विशुद्ध जल ही आवश्यक होता है। स्नान के लिये पचास पल जल का विधान है। वस्त्र बारह अङ्गुल से ज्यादा, नवीन और जोड़ा होना चाहिये। आभरण स्वर्णनिर्मित हों और उनमें मोती आदि जड़े हों। गन्ध-द्रव्य में चन्दन, अगर, कर्पूर आदि एक में मिला दिये गये हों। एक पल के लगभग उनका परिमाण कहा गया है। पुष्प पचास से अधिक हों, अनेक रंग के हों। धूप गुग्गुल का हो और कांस्यपात्र में निवेदन किया जाय। नैवेद्य में एक पुरुष के भोजनयोग्य वस्तु होनी चाहिये। चर्व्य, चोष्य, लेह्य, पेय- चारों प्रकार की सामग्री हो। दीप कपास की बत्ती से कर्पूर आदि मिलाकर बनाया जाय। बत्ती की लंबाई चार अङ्गुल के लगभग हो और दृढ़ हो। दीपक के साथ शिलापिष्टका भी उपयोग करना चाहिये। इसी को श्री अथवा आक कहते हैं, जो आरती के समय सात बार घुमाया जाता है। दूर्वा और अक्षत की संख्या सौ से अधिक समझनी चाहिये। एक-एक सामग्री अलग-अलग पात्र में रक्खी जाय। वे पात्र सोने, चाँदी, ताँबे, पीतल या मिट्टी के हों। अपनी शक्ति के अनुसार ही करना चाहिये। जो वस्तु अपने पास नहीं हो, उसके लिये चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं और अपनी शक्ति-सामर्थ्य के अनुसार जो मिल सकती हों, उनके प्रयोग में आलस्य, प्रमाद और संकीर्णता नहीं करनी चाहिये।

पूजा के पाँच प्रकार

शास्त्रों में पूजा के पाँच प्रकार बताये गये हैं- अभिगमन, उपादान, योगं, स्वाध्याय और इज्या। देवता के स्थान को साफ करना, लीपना, निर्माल्य हटाना- ये सब कर्म 'अभिगमन' के अन्तर्गत हैं। गन्ध, पुष्प आदि पूजा-सामग्री का संग्रह 'उपादान' है। इष्टदेव की आत्मरूप से भावना करना 'योग' है। मन्त्रार्थ का अनुसंधान करते हुए जप करना, सूक्त, स्तोत्र आदि का पाठ करना, गुण, नाम, लीला आदि का कीर्तन करना, वेदान्तशास्त्र आदि का अभ्यास करना- ये सब **'स्वाध्याय'** हैं। उपचारों के द्वारा अपने आराध्य देव की पूजा 'इज्या' है। ये पाँच प्रकार की पूजाएँ क्रमशः सार्ष्टि, सामीप्य सालोक्य, सायुज्य और सारूप्य मुक्ति को देने वाली हैं।